2 जनवरी 2014, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-32 / 2012-14

जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के व्याख्यान प्रतिदिन अब आधे घंटे

जी-जागरण पर प्रतिदिन प्रातः 6.30 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 36, अंक : 19 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये

जनवरी (प्रथम), 2013 (वीर नि. संवत्-2540) सह-सम्पादक : **डॉ. संजीवकुमार गोधा** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

पञ्चकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव सानंद संपन्न

जबेरा-दमोह (म.प्र.) : यहाँ श्री महावीर स्वामी कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल जबेरा के तत्त्वावधान में आयोजित श्री नेमिनाथ दिगम्बर जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव शनिवार, दिनाँक 14 दिसम्बर से गुरूवार 19 दिसम्बर तक अनेक विशिष्ट कार्यक्रमों सहित सानन्द सम्पन्न हुआ।

महोत्सव में डॉ. उत्तमचंदजी सिवनी, पण्डित अभयकुमारजी देवलाली, पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर, पण्डित गुलाबचंदजी बीना, पण्डित अनिलजी शास्त्री भिण्ड इत्यादि अनेक विद्वानों के प्रवचनों का लाभ उपस्थित जनसमुदाय को मिला।

पञ्चकल्याणक की सम्पूर्ण प्रतिष्ठा-विधि प्रतिष्ठाचार्य ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री दिल्ली ने सह-प्रतिष्ठाचार्य ब्र.नन्हे भैया सागर, ब्र.सुकुमालजी झांझरी उज्जैन, पण्डित सुबोधजी शाहगढ, पण्डित सुनीलजी धवल भोपाल, पण्डित कांतिकुमारजी, पण्डित रमेशजी गायक, पण्डित मनोजजी जैन जबलपुर, ब्र. श्रेणिकजी जैन जबलपुर, पण्डित संदीपजी शास्त्री जबलपुर, मंगलार्थी अकलंक जैन आदि के सहयोग से शुद्ध तेरापंथ आम्नायानुसार सम्पन्न कराई गई।

बालक नेमिकुमार के माता-पिता बनने का सौभाग्य श्रीमती राजकुमारी-सनतकुमार जैन को प्राप्त हुआ। महोत्सव के सौधर्म इन्द्र-इन्द्राणी श्री संजय-सपना सिंघई थे। सिंहद्वार व प्रतिष्ठा मंच का उद्घाटन श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन ट्रस्ट ज्ञानोदय भोपाल के सदस्यों द्वारा किया गया।

महोत्सव का ध्वजारोहण श्री उदयकुमार चौधरी परिवार जबेरा ने किया। स्वाध्याय भवन का उद्घाटन सेठ गुलाबचंदजी जैन सागर एवं जिनमंदिर का उद्घाटन श्री कमलकुमारजी जैन जबलपुर द्वारा किया गया।

महोत्सव के विशिष्ट कार्यक्रमों के अन्तर्गत अनन्तमती बालिका मण्डल जबेरा द्वारा अकलंक-निकलंक के जीवन पर आधारित 'बलिदान' नाटिका का आयोजन हुआ। दिनांक 17 दिसम्बर को तप कल्याणक के दिन प्रथम आहार दान श्री विमलकुमारजी जैन (नीरू केमिकल्स) परिवार दिल्ली द्वारा दिया गया। रात्रि में बालिका मण्डल द्वारा 'जम्बूस्वामी का वैराग्य' नामक नाटिका का बहुत सुन्दर मंचन किया गया।

इस महोत्सव में महावीर भगवान की 41 इंची, सीमंधर भगवान एवं शान्तिनाथ भगवान की 37 इंची पाषाण प्रतिमाओं के अतिरिक्त वासुपूज्य भगवान, पार्श्वनाथ भगवान विधिनायक नेमिनाथ भगवान एवं मल्लिनाथ भगवान की धातु की प्रतिमाओं की प्राण प्रतिष्ठा की गई। संपूर्ण महोत्सव में पूजन, प्रवचन, भक्ति एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों की धूम मची रही, जिसमें लगभग 5 हजार साधर्मियों ने धर्मलाभ लिया।

महोत्सव के सभी कार्यक्रम श्री रजनीभाई दोशी एवं श्री अशोकजी जैन जबलपुर के निर्देशन में सम्पन्न हुये। **- विराग शास्त्री**

(आगामी कार्यक्रम...)

जयपुर पंचकल्याणक का द्वितीय वार्षिक महोत्सव

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर द्वारा फरवरी 2012 में ऐतिहासिक एवं भव्य पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव का आयोजन किया गया था; उस महामहोत्सव की यादें सभी को पुन: ताजा हो जावें, इस हेतु पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव का **द्वितीय वार्षिक महोत्सव दिनांक 28 फरवरी से 2 मार्च 2014 तक श्री टोडरमल स्मारक भवन जयपुर में अनेक मांगलिक कार्यक्रमों सहित आयोजित होने जा रहा है।**

इस त्रिदिवसीय महोत्सव में विशिष्ट विद्वानों का प्रवचन, प्रौढ कक्षा व गोष्ठियों के माध्यम से अपूर्व लाभ प्राप्त होगा। इसके अतिरिक्त नित्य-नियम पूजन, जिनेन्द्र भक्ति, सांस्कृतिक कार्यक्रम आदि का भी आयोजन किया जायेगा।

इस मंगल महोत्सव में पधारने हेतु आप सभी को हार्दिक आमंत्रण है।

सम्पादकीय –

वस्तु स्वातंत्र्य और अहिंसा

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

अतः जो यह मानता है कि मैं पर जीवों को मारता हूँ, और पर जीव मुझे मारते हैं, मैं जीवों की रक्षा करता हूँ, उन्हें सुखी-दुःखी करता हूँ या वे मुझे बचाते हैं, सुखी-दुःखी करते हैं। वह मूढ़ (मोही) है, अज्ञानी है, इसके विपरीत मानने वाला ज्ञानी है।

आचार्य अमृतचंद्र ने वस्तु स्वातंत्र्य के संदर्भ में जीवों में हिंसकपना एवं अहिंसकपना सिद्ध करते हुए कलश में कहते हैं कि-

जीवन-मरण अर दुक्ख-सुख सब प्राणियों के सदा ही।
अपने कर्म के उदय के अनुसार ही हों नियम से।।
करे कोई किसी के जीवन-मरण अर दुक्ख-सुख।
विविध भूलों से भरी यह मान्यता अज्ञान है।।[१]

इस जगत में जीवों के जीवन-मरण, सुख-दुःख - यह सब सदैव नियम से अपने द्वारा उपार्जित कर्मोदय से होते हैं। दूसरा पुरुष दूसरे के जीवन मरण, सुख-दुःख का कर्त्ता हैं - यह मानना तो अज्ञान है।

जो पुरुष पर के जीवन-मरण, सुख-दुःख का कर्ता दूसरों को मानते हैं, वे अहंकार रस से भरे हैं कर्मेन्द्रिय को करने के इच्छुक होने से नियम से मिथ्यादृष्टि हैं और अपने आत्मा का घात करने वाले होने से हिंसक है।''[२]

आगम में जो स्व और अन्य प्राणियों की अहिंसा की बात कही गई है, वह केवल आत्मरक्षा के लिए है, पर के लिए नहीं।

आज से एक हजार वर्ष पूर्व आचार्य अमृतचन्द्र ने हिंसा-अहिंसा के स्वरूप का जिस सूक्ष्मता से कथन किया वैसा अन्यत्र कहीं देखने में नहीं आया। वस्तु स्वातंत्र्य के संदर्भ में उनके कतिपय अत्यन्त उपयोगी तथ्य प्रस्तुत हैं। हिंसा-अहिंसा के स्वरूप का उद्घाटन करते हुए वे कहते हैं कि ''वस्तुतः तो हिंसा-अहिंसा का सम्बन्ध अपने आत्मा से ही है, परजीवों की हिंसा तो कोई कर ही नहीं सकता। मूल कथन इसप्रकार है -

अप्रादुर्भावः खलु रागादीनां भवत्य हिंसेति।
तेषामेवोत्पत्ति हिंसेति जिनागमस्य संक्षेपः।।

आत्मा में रागादि भावों की उत्पत्ति ही हिंसा है और रागादि भावों की उत्पत्ति न होना ही अहिंसा है।''[३]

१. समयसार पद्यानुवाद : डॉ. भारिल्ल २. समयसारकलश १६८, १६९
३. पुरुषार्थ सिद्धयुपाय श्लोक ४४

पण्डित टोडरमलजी ने भी लिखा है कि हिंसा में प्रमाद परिणति मूल है और विषय सेवन में अभिलाषा मूल है। इसे ही यदि द्रव्य हिंसा व भाव हिंसा के रूप में कहें तो इस प्रकार कह सकते हैं - रागादि भावों के होने पर आत्मा के उपयोग की शुद्धता का घात होना भावहिंसा है और अपने रागादिभाव निमित्त है जिसमें - ऐसे अपने पराये द्रव्य प्राणों का घात होना द्रव्य हिंसा है।

यहाँ ध्यान देने योग्य बात यह है कि पराये प्राणों के घात में द्रव्यहिंसा का पापबंध किसको हुआ? हमारे राग-द्वेष से स्वयं की भावहिंसा तो होती ही है, पर जीवों के घातों में भी हमारे राग-द्वेष ही निमित्त बनते हैं, अतः व्यवहार में निमित्त पर आरोप होने से द्रव्य हिंसा भी हमारी ही हुई; क्योंकि उस द्रव्य हिंसा के फल का भागीदार भी हमारा राग-द्वेष ही है। अन्य जीव का मरण तो उसके आयुकर्म के अनुसार होना ही था सो हुआ। फिर भी निश्चय से हमारे रागादि भावहिंसा एवं उपचार से उस मृत्यु को द्रव्य हिंसा कहने का व्यवहार है। परन्तु पर के जीवन-मरण से किसी को कोई पुण्य-पाप नहीं होता। पुण्य-पाप तो हमारे प्रमाद के कारण ही होता है। वस्तुतः दोनों प्रकार की हिंसा एक व्यक्ति में ही हुई, क्योंकि अन्य के प्राणों के व्यपरोपण से वही निमित्त बना है न ! कहा भी है -

''सूक्ष्मापि न खलु हिंसा, परवस्तु निबन्ध ना भवति पुंसः।
हिंसायतन निवृत्ति परिणाम विशुद्धये तदपि कार्याः।।

यद्यपि परवस्तु के कारण सूक्ष्म हिंसा भी नहीं होती, तथापि अपने परिणामों की विशुद्धि के लिए हिंसा के आयतनों से तो बचना ही चाहिए।''[१]

इसप्रकार यद्यपि वस्तुस्वातंत्र्य के सिद्धान्त की स्वीकृति में भूमिकानुसार अहिंसा के उपदेश में कोई बाधा नहीं आती; किन्तु ध्यान रहे, मारने के भाव की भाँति बचाने के भाव भी शुभभाव होने से हिंसा का ही दूसरा प्रकार है। अतः यह भी बंध का ही कारण है। मैं पर जीव की रक्षा कर सकता हूँ या मार सकता हूँ - यह मान्यता तो मिथ्यात्व है, इस बात को अवश्य ध्यान में रखना योग्य है।

विराग ने कहा ''वस्तु स्वातंत्र्य के संदर्भ में अहिंसा'' विषय तो स्पष्ट हो गया; परन्तु अभी जो निमित्त की बात आई है, उस परद्रव्य रूप निमित्त का वस्तु स्वातंत्र्य में क्या स्थान है ?

समता श्री ने आश्वस्त किया 'आज का समय पूरा हुआ, कल वस्तुस्वातंत्र्य को निमित्त-उपादान के आलोक में समझायेंगे।'

१. पुरुषार्थसिद्धयुपाय श्लोक ४९

राष्ट्रीय स्वतंत्रता और वस्तुस्वातंत्र्य

समता श्री प्रवचनार्थ आसन पर बैठीं ही थीं कि उनकी नजर सामने बैठे समधी स्वतंत्रकुमार और जवाँई गणतंत्रकुमार पर जा पड़ी। महिला कक्ष में ज्योत्स्ना भी बैठी थी। उन्हें प्रवचन में आया देखकर - समताश्री ने मन ही मन प्रसन्न होते हुए उनका परिचय कराने हेतु हँसते हुए कहा ''स्वतंत्रता प्रेमियों को १५ अगस्त और २६ जनवरी के आजादी के दिन इतने महत्वपूर्ण हो गये हैं कि उन दिनों में जन्में सहस्त्रों शिशुओं के नाम भी स्वतंत्रकुमार और गणतंत्रकुमार रखे गए। जिसके प्रमाण के रूप में हमारे सामने स्वतंत्रकुमार और गणतंत्रकुमार दोनों बैठे हैं। ऐसे स्वतंत्रता प्रेमी परिवार के महानुभाव श्री स्वतंत्रकुमारजी और चि. गणतंत्रकुमार आज धर्मसभा में पधारे हैं, हम उनका स्वागत करते हैं और प्रतिदिन पधारने के लिए आमंत्रित करते हैं।

संयोग से बेटी ज्योत्स्ना के श्वसुर और पति का जन्मदिन भी १५ अगस्त और २६ जनवरी है, इसीकारण उसके स्वसुर का नाम श्री स्वतंत्रकुमार और पति का नाम चि. गणतंत्रकुमार रखा गया होगा।

अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए समताश्री ने कहा ''यद्यपि प्रजातंत्रीय प्रणाली के संदर्भ में 'स्वतंत्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है' यह नारा अति उत्तम है। इस नारे ने ही सैकड़ों वर्षों से परदेशियों की पराधीनता में जकड़ी जनता के कानों में जागरण का मंत्र फूँककर उसे पराधीनता से मुक्त कराया है। एतदर्थ इसमें हुई कुर्बानी की जितनी भी प्रशंसा की जाय कम है। देश को परदेशियों की गुलामी से सदा मुक्त रहना ही चाहिए; परंतु हम यहाँ जिस वस्तु स्वातंत्र्य के सिद्धान्त की बात कर रहे हैं, वह धर्म और दर्शन में प्रतिपादित वस्तु स्वातंत्र्य का सिद्धान्त इस राष्ट्रीय स्वतंत्रता से बिल्कुल भिन्न है। दोनों में दीपक और सूरज जैसा महान अन्तर है। यदि राष्ट्रीय स्वतंत्रता दीपक है तो वस्तुस्वातंत्र्य का सिद्धान्त सूरज है।

वस्तुतः राष्ट्रीय स्वतंत्रता का उस आध्यात्मिक वस्तुस्वातंत्र्य के सिद्धान्त से कोई सम्बन्ध नहीं है; क्योंकि यह राष्ट्रीय स्वतंत्रता तो केवल मानव समाज तक ही सीमित है। वह भी मात्र विदेशी शासन-प्रशासन एवं भारतीय राजतंत्रीय और जागीरदारी, जमीदारी प्रथा से आजाद कराने तक ही सीमित है। साथ ही स्वदेशी प्रजातंत्रीय प्रणाली में और शासकीय-प्रशासकीय नियमों का निर्वाह करने, कानूनों की पालना करने की पराधीनता तो इसमें भी कम नहीं है। इतना ही नहीं पारिवारिक भरण-पोषण के लिए नौकरी चाकरी करने की परतंत्रता भी है ही। अतः इस लौकिक स्वतंत्रता से वह आध्यात्मिक वस्तुस्वातंत्र्य की बात बिल्कुल निराली है। दोनों बिल्कुल भिन्न-भिन्न हैं।

लौकिक आजादी के सम्बन्ध में एक व्यंगकार ने तो व्यंग में यहाँ तक कह डाला कि ''यह कैसी आजादी ? जिसमें मनमाने ढंग से सड़क पर चलने की भी आजादी नहीं। जगह-जगह नोटिस बोर्ड लगे 'चलो सड़क की बाँयी पटरी' खाने-पीने की आजादी नहीं, यदि भाँग खाकर या शराब पीकर रोड़ पर निकले तो पुलिस पकड़ कर कोतवाली में बिठा देती है, जहाँ देखो वहाँ 'नो एन्ट्री' के नोटिस बोर्ड लगे हैं। पालतू पशुओं जैसे बन्धन हैं; फिर भी कहते हो कि हम आजाद हैं।'' खैर !

व्यंगकार ने तो कुछ अधिक ही कह दिया; फिर भी पराधीनता तो कदम-कदम पर है ही। इसलिए हम दृढता से कह सकते हैं कि वस्तुस्वातंत्र्य के सिद्धान्त से इस लौकिक स्वतंत्रता और परतंत्रता का दूर का भी सम्बन्ध नहीं है; क्योंकि यह मात्र मानव के व्यवहारिक जीवन की बातें हैं और वह आध्यात्मिक सिद्धान्त है, जिसे समझने से और जिसकी श्रद्धा से हम निश्चिंत और निर्भार होकर ध्यान और अध्ययन, चिन्तन-मनन कर अर्न्तमुखी हो सकते हैं।''

स्वतंत्रकुमार और गणतंत्रकुमार भी इस प्रवचन को ध्यान से सुन रहे थे। उनके मन में अनेक प्रश्न उठे; क्योंकि ऐसा आध्यात्मिक प्रवचन उन्होंने पहली बार ही सुना था। वह ज्ञान-वैराग्य परक प्रवचन सुनकर उनका हृदय हिल गया। वे बहुत ही प्रभावित हुए; परन्तु उनकी समझ में यह नहीं आ रहा था कि न केवल जन-जन की स्वतंत्रता और न केवल मात्र जीवों की स्वतंत्रता, ये तो कण-कण की स्वतंत्रता की बात कह रहीं हैं। यह कैसे संभव है ?

स्वतंत्रकुमार सोचता है - ''क्या कण-कण अर्थात् पुद्गल का एक-एक परमाणु स्वतंत्र है ? मैंने मो अबतक प्रवचनों में ऐसा सुना है कि 'आत्मा कर्मों के आधीन है, कर्म बहुत बलवान होते हैं, ये जीवों को नाना प्रकार से नाच नचाते हैं। कहा भी है - 'कबहूँ इतर निगोद, कबहूँ नर्क दिखावे।' तथा यह भी स्तुति में बोलते हैं कि हे प्रभो! मैंने इनका कुछ भी बिगाड़ नहीं किया, फिर भी इन कर्मों ने बिना कारण बहुविध वैर लिया है। ये कर्म ही तो जीवों को चौरासी लाख योनियों को भटकाते हैं। यद्यपि नरक और निगोद हमें इन चर्म चक्षुओं से दिखाई नहीं देते; परन्तु लट, केंचुआ, चींटी-चींटे, मक्खी-मच्छर, पशु, पक्षी आदि और मगरमच्छ, मछलियाँ आदि असंख्य अनन्त जीवों को तड़फते-छटपटाते, भयभीत हो इधर-उधर भागते-दौड़ते तो हम प्रत्यक्ष देखते ही हैं - ये कर्मों के फल को ही तो भोग रहे हैं, कर्मों के आधीन ही तो हैं; फिर जन-जन व कण-कण की स्वतंत्रता कैसे संभव है?''

स्वतंत्रकुमार ने निवेदन किया - ''इस समय आप मेरी समधिन नहीं, बल्कि गुरु हैं। यह तो मेरा परम सौभाग्य है कि आप जैसी विदुषी से सम्बन्ध जुड़ने का मुझे सुअवसर मिला और जब से आप की बेटी ज्योत्स्ना जैसी बहू के पग मेरे घर में पड़े, तब से घर का वातावरण ही बदल गया। हमारा तो जीवन ही सफल हो गया। मैंने आपका

प्रवचन बहुत ध्यान से सुना है, बहुत आनन्द आया; परन्तु कुछ प्रश्न मेरे मन में उठे हैं; यदि अभी असुविधा न हो तो ..... अन्यथा जब आपको अनुकूलता हो, मैं तभी हाजिर हो जाऊँगा।''

समताश्री ने कहा - ''स्वतंत्रजी ! ऐसी कोई बात नहीं, आप आये और मेरी बातों को ध्यान से सुना, इसके लिए आपको बहुत-बहुत साधुवाद ! इस काम के लिए कभी कोई असुविधा की बात नहीं है, सदैव सुविधा ही सुविधा है। आप जब पूछना चाहें, पूछें। मैं अपनी योग्यता के अनुसार आपकी शंकाओं का समाधान करने का प्रयास करूँगी।

गणतंत्र और ज्योति भी आये हैं। आप सबका बहुत-बहुत स्वागत है। मैं चाहती थी कि ज्योति को घर-वर धर्म प्रेमी मिलें। मेरी भावना पूरी हुई - यह देखकर मुझे बहुत हर्ष है। एतदर्थ आपको पुनः पुनः साधुवाद !'' **(क्रमशः)**

आध्यात्मिक युवा चेतना शिविर संपन्न

कोटा (राज.) : यहाँ रामपुरा स्थित श्री दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल के तत्त्वावधान में दिनांक 13 से 18 दिसम्बर तक छः दिवसीय आध्यात्मिक युवा चेतना शिविर संपन्न हुआ।

विशेष रूप से युवा वर्ग के लिये आयोजित इस शिविर में ब्र. सुमतप्रकाशजी के प्रातःकाल प्रवचनसार पर एवं सायंकाल आज की जीवन शैली में युवा वर्ग को आध्यात्मिक एवं नैतिक संस्कारों से सुसज्जित किये जाने वाले प्रेरणास्पद प्रवचनों का लाभ मिला।

इस शिविर में एक दिन पंचपरमेष्ठी विधान का भी आयोजन किया गया। विधि-विधान के संपूर्ण कार्य पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री कोटा द्वारा संपन्न कराये गये।

कार्यक्रम का संयोजन पण्डित चिन्मयजी शास्त्री कोटा द्वारा किया गया।

(आगामी कार्यक्रम...)

तीर्थधाम सिद्धायतन का दशाब्दी समारोह

तीर्थधाम सिद्धायतन-द्रोणगिरि (म.प्र.) : यहाँ श्री गुरुदत्त कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट, द्रोणगिरि द्वारा सिद्धक्षेत्र द्रोणगिरि में स्थापित संकुल **तीर्थधाम सिद्धायतन के दशवर्ष पूर्ण होने के अवसर पर ट्रस्ट द्वारा 21 से 23 फरवरी 2014 तक 'दशाब्दी समारोह' का आयोजन अत्यंत विशाल स्तर पर धूमधाम से होने जा रहा है।**

इस अवसर पर 'अथ से अब तक...' एक स्मारिका का प्रकाशन भी किया जा रहा है।

आप सभी साधर्मी भाई-बहिनों को इस कार्यक्रम में पधारने हेतु हार्दिक आमंत्रण है। **- समस्त ट्रस्टीगण**

पोस्टर मंगावें

पतंगों के मांझे से होने वाले नुकसान को दर्शाने वाले पोस्टर मंगाने हेतु संपर्क करें **- संजय शास्त्री, मो. 9509232733**

साप्ताहिक गोष्ठियाँ संपन्न

जयपुर (राज.) : (1) यहाँ टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय द्वारा होने वाली गोष्ठियों की शृंखला में दिनांक 8 दिसम्बर को **'जैन न्याय : एक संक्षिप्त रूपरेखा'** विषय पर एक गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर ने की।

श्रेष्ठ वक्ता के रूप में पारस जैन (उपाध्याय कनिष्ठ) एवं राहुल जैन (शास्त्री अन्तिम वर्ष) रहे।

गोष्ठी का मंगलाचरण प्रशांत जैन (उपाध्याय कनिष्ठ) एवं संचालन शास्त्री तृतीय वर्ष के निलय जैन व प्रवीण जैन ने किया।

(2) दिनांक 22 दिसम्बर 2013 को **'लघु समयसार : छहढाला'** विषय पर उपाध्याय वर्ग हेतु एक गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता पण्डित नीतेश शास्त्री जयपुर ने की।

श्रेष्ठ वक्ता के रूप में श्रेयांस जैन (उपाध्याय कनिष्ठ) एवं नमन जैन (उपाध्याय वरिष्ठ) रहे।

गोष्ठी का मंगलाचरण अभय जैन खड़ैरी (उपाध्याय कनिष्ठ) एवं संचालन शास्त्री तृतीय वर्ष के रूपेन्द्र जैन व प्रीतिंकर जैन ने किया।

(3) दिनांक 25 दिसम्बर को **'चार अनुयोग : एक अनुशीलन'** विषय पर उपाध्याय वर्ग हेतु एक गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता पण्डित सोनूजी शास्त्री जयपुर ने की।

श्रेष्ठ वक्ता के रूप में अनुभव जैन भिण्ड (उपाध्याय वरिष्ठ) एवं जिनेन्द्र जैन बमनौरा (उपाध्याय वरिष्ठ) रहे।

गोष्ठी का मंगलाचरण अमन जैन दिल्ली (उपाध्याय कनिष्ठ) एवं संचालन शास्त्री तृतीय वर्ष की कुमारी ईर्या जैन दिल्ली व साकेत जैन जयपुर ने किया। आभार प्रदर्शन एवं ग्रन्थ भेंट पण्डित अनेकान्तजी शास्त्री ने किया।

(4) दिनांक 28 दिसम्बर 2013 को **'पंचभाव : एक अनुशीलन'** विषय पर उपाध्याय वर्ग हेतु एक गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता ब्र. विमलाबेन जयपुर ने की।

श्रेष्ठ वक्ता के रूप में ऋषभ जैन (उपाध्याय वरिष्ठ) एवं सिद्धार्थ जैन (उपाध्याय वरिष्ठ) रहे।

गोष्ठी का मंगलाचरण सागर पाटील (उपाध्याय कनिष्ठ) एवं संचालन शास्त्री तृतीय वर्ष के नील हरिया व प्रीतिंकर जैन ने किया।

मासिक विचार गोष्ठी संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ सिद्धार्थ नगर स्थित श्री दिगम्बर जैन मन्दिर में राजस्थान जैन साहित्य परिषद् जयपुर द्वारा दिनांक 21 दिसम्बर 2013 को 51वीं मासिक विचारगोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसका विषय था - **'वर्तमान में जैनत्व के अस्तित्व के लिये चुनौती - समस्या और समाधान'**।

मुख्य वक्ता पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर द्वारा इस विषय पर प्रकाश डालते हुए बालकों में संस्कारों की आवश्यकता पर प्रकाश डाला गया। कार्यक्रम के संयोजक श्री एस.एल. गंगवाल थे। **- महेशचंद जैन चांदवाड़**

बारह भावना

डॉ. अरविन्दकुमार जैन, सुजानगढ (राज.)

पीठिका

भावमय संसार है यह, मोक्ष भी है भावमय।
कारण बने ये भाव ही, सुख-दुःख भी हैं भावमय।।
भावना से भाव शुद्धि, शुद्धि तत्त्व विचार है।
भवभोग तन को जहर माने भावना का सार है।।
कर्मक्षय का हेतु है, वैराग्य की संवर्धिनी।
सुख शान्ति अरु आनन्द जननी, भावना भव नाशिनी।।

अनित्य भावना

जन्म का ही मरण है, यौवन बुढापा सहित है।
सम्पदा है चंचला, संयोग का ही वियोग है।।
जगत का ये स्वभाव जानो, बदल सकते हैं नहीं।
भ्रम रोग पीड़ित जीव मूरख, सत्य को जाने नहीं।।
क्षणिकता की भावना ये, तत्त्व की संबोधिनी।
सुख शान्ति अरु आनन्द जननी, भावना भव नाशिनी।।

अशरण भावना

आयु क्षय से मरण होवे, आयु से जीवन रहे।
आयु दे ले सकते नहीं, कौन किसका शरणा बने।।
उपकार औषधि मंत्र साधन, मोह की यह वासना।
पाप - पुण्याश्रित रहें ये, मरण निश्चय जानना।।
धर्म ही इक शरण जानो, आत्म की संबोधिनी।
सुख शान्ति अरु आनन्द जननी, भावना भव नाशिनी।।

संसार भावना

जन्म धरता जीव घूमे, रंच सुख पाता नहीं।
खाज में ज्यों कोढ कृत दुःख, जीव सह सकता नहीं।।
कीड़ पीड़ित श्वानवत्, भव-भव भ्रमें संसार में।
संयोग देखे तृष्णा बढती, रहता खड़ा मझधार में।।
मोह से संसार दुःख ये, भावना सुखवर्धिनी।
सुख शान्ति अरु आनन्द जननी, भावना भव नाशिनी।।

एकत्व भावना

जीवन-मरण सुख-दुःख अकेला, जीव भोगे आपदा।
सम्बन्ध स्वारथ के बने, ये तन भी न रहता सदा।।
मोह वश अपना कहे, कोई हाथ में रहता नहीं।
अपनी करनी अपनी भरनी, ये बात जीव माने नहीं।।
एकला की भावना ये, मोक्ष मग संवर्धिनी।
सुख शान्ति अरु आनन्द जननी, भावना भव नाशिनी।।

अन्यत्व भावना

तन मिले आयु प्रमाण, जीव अनादि से अमर।
पुद्गल मयी ये देह मरती, चैतन्य जगता प्रति प्रहर।।
पय नीर मेला, जीव देह ज्यों, पर मोह से एकत्व है।
धन पुत्र से अपनत्व क्यों, जब प्रत्यक्ष ही भिन्नत्व है।।
अन्यत्व की ये भावना, संसार की संमर्दिनी।
सुख शान्ति अरु आनन्द जननी, भावना भव नाशिनी।।

अशुचि भावना

मल मयी मल स्रवै प्रतिपल, अशुचि का कारण बनें।
दुर्जन स्वभावी देह में यह, मूर्ख प्रीति क्यों करे।।
पर देह से जो विरक्त हो, निज देह से भी विरक्त हो।
चैतन्य पावन आतमा में, जो सदा अनुरक्त हो।।
ज्ञानी करे तप देह से, जो करम की निरजरिणी।
सुख शान्ति अरु आनन्द जननी, भावना भव नाशिनी।।

आस्रव भावना

शुभ अशुभ भाव समस्त ही, संसार दुःख कारण बनें।
फल विषैं पुण्य अरु पाप के, जीव चार गतियों में भ्रमें।।
मोहादि भाव अनिष्टकर, विपरीत आत्म स्वभाव से।
पर योग से उत्पन्न होते, चैतन्य के हैं विकार ये।।
हेयता पर भाव की, जो आस्रवों की नाशिनी।
सुख शान्ति अरु आनन्द जननी, भावना भव नाशिनी।।

संवर भावना

चैतन्य भासे ज्ञान में, चैतन्य का अनुभव करे।
परद्रव्य जड़मय भिन्न जाने, कर्मों का संवर करे।।
भेद के विज्ञान बिन, मिथ्यात्व सुभट रुकते नहीं।
व्रत समिति गुप्ति धर्म परिषह, चारित्र से आते नहीं।।
भेदपूर्वक आत्म अनुभव, कर्म की विध्वंसिनी।
सुख शान्ति अरु आनन्द जननी, भावना भव नाशिनी।।

निर्जरा भावना

बिन ज्ञान तप कर कर्म झारे, ग्रैवेयक तक पद पा लिया।
संसार चक्र मिटा नहीं, ना मोक्षमग में पग धरा।।
आत्मशुद्धि कर्मनाशक, दशा हो निर्ग्रन्थता।
अग्नि में ज्यों स्वर्ण तपता, तप विषैं त्यों आतमा।।
संवर सहित तप निर्जरा है, कर्म गिरि की खण्डिनी।।
सुख शान्ति अरु आनन्द जननी, भावना भव नाशिनी।।

लोक भावना

षट् द्रव्यमय पर लोक है, निज लोक है चैतन्यमय।
शिव लोक का वासा करो, छूटे भ्रमण का रोग यह।।
जड़ लोक में योग्य पद ना, अपद में क्यों सड़ रहा।
मोह मद का पान कर, अपमान अपना कर रहा।।
तू श्रेष्ठ अरु पद सिद्ध तेरा, सर्वज्ञ की संभाषिणी।
सुख शान्ति अरु आनन्द जननी, भावना भव नाशिनी।।

बोधिदुर्लभ भावना

काल अनन्त निगोद माहीं, त्रसपना दुर्लभ कहा।
जन्म मानुष भाव समकित, मुनिपना दुर्लभ महा।।
सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्र, रत्नत्रय ये बोधि है।
पाकर सुयोग न करे उद्यम, नर देह की यह हार है।।
जाग चेतन धार संयम, ये ही मुक्तिकारिणी।
सुख शान्ति अरु आनन्द जननी, भावना भव नाशिनी।।

धर्म भावना

भव सिन्धु तारे, कर्म नाशे, सुख करावे धर्म है।
रत्नत्रय ही दश धरम, दया धरम का मर्म है।।
चिन्तामणि पारस कल्पतरु, धर्म के सेवक कहे।
इन्द्र नाग नरेन्द्र वा, अहमिन्द्र भी जिसको चहे।।
मोह छोड़ो धर्म धारो, धर्म ही शिव गामिनी।
सुख शान्ति अरु आनन्द जननी, भावना भव नाशिनी।।

माहात्म्य

मोक्ष की सीढी बनी, वैराग्य की जननी कही।
भाया जिन्होंने भावना को, पाई उनने शिवमही।।
राग गाले ज्ञान भासे, मुक्तिरमा की भायली।
मित्रवत् चाहें मुनिजन, जिनेन्द्र की वाणी यही।।
रविज्ञान से अरविन्द खिलते, मोहतम क्षयकारिणी।
सुख शान्ति अरु आनन्द जननी, भावना भव नाशिनी।।

सिद्धभक्ति

12 चतुर्थ पूजन

-डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

आठवाँ छन्द इसप्रकार है -

(चौपाई)

जिन चित ध्यान सलिल तुम धारा, ते मुनि तीरथ हैं निरधारा।
तुम गुण हंस तुम्हीं सरवासी, वचन जाल में लेत न फांसी ।।८।।

जिन लोगों ने अपने चित्त में आपके ध्यानरूपी जल को धारण किया है; वे मुनिराज तीर्थ बन गये, जहाँ वे खड़े हो गये, वे स्थान तीर्थ बन गये। ऐसा निर्धारण मुझे हो गया है।

हे सिद्ध भगवन् ! आपके गुणोंरूपी हंसों को आवास देनेवाले तालाब तुम्हीं हो। तात्पर्य यह है आप एक सुन्दरतम मानसरोवर झील जैसे तालाब हो। उस तालाब में तुम्हारे गुणरूपी हंस रहते हैं, विचरण करते हैं, केलि करते हैं।

मैंने बहुत कोशिश की कि आपके गुणरूपी हंस मेरे वचनरूपी जाल में फंस जावें; परन्तु वे आपके गुणरूपी हंस मेरे वचनों के जाल में फंसते ही नहीं हैं। अत: अब मैं मजबूर हूँ।

तात्पर्य यह है कि जो व्यक्ति आपका ध्यान करते हैं; वे साधु इतने महान बन जाते हैं कि लोग उन्हें तीर्थ के रूप में पूजने लगते हैं। मैंने आपके गुणों को वाणी देने की बहुत कोशिश की, पर मेरी वाणी आपके गुणों का प्रतिपादन करने में सफल नहीं हुई, असफल ही रही।

इसप्रकार आपकी महिमा अपार है, उसका पार पाना संभव नहीं है। नौवाँ छन्द इसप्रकार है -

(चौपाई)

जगत बंधु गुणसिंधु दयानिधि, बीजभूत कल्याण सर्वसिधि।
अक्षय शिवस्वरूप श्रिय स्वामी, पूरण निजानन्द विश्रामी ।।९।।

हे जगतबन्धु, हे गुणसिन्धु, हे दयानिधि ! आप सभी का कल्याण करनेवाली सिद्धियों के बीज हो, बीजभूत हो। तात्पर्य यह है कि जीवन में प्राप्त होनेवाली सिद्धियों के एकमात्र आधार आप ही हो।

हे भगवन् ! आप अक्षय हो, अत: कभी भी क्षय को प्राप्त नहीं होवोगे; आप कल्याणस्वरूप हो, मोक्षलक्ष्मी के स्वामी हो। हे निजानन्द में विश्राम करनेवाले भगवन् ! आप अपने आप में परिपूर्ण हो।

हे भगवन् ! लोक में रहनेवाले जितने भी प्राणी हैं, आप उनके हितकारी बन्धु हो, उन पर दया करनेवाले हो, दया के खजाने हो और अनन्तगुणों के सागर हो। जगत की कल्याणकारी जितनी भी सिद्धियाँ हैं, आप उनके बीज हैं, उनकी प्राप्ति आपकी भक्ति से ही होती है। स्वयं के आनन्द में विश्राम करनेवाले हे भगवन् ! आप कभी नष्ट नहीं होनेवाले कल्याणस्वरूप हो।

दसवाँ छन्द इसप्रकार है -

(चौपाई)

शरणागत सर्वस्व सुहितकर, जन्ममरण दुख आधि-व्याधि हर।
'संत' भक्ति तुम हो अनुरागी, निश्चै अजर अमर पद भागी ।।१०।।

हे सिद्ध भगवन् ! आपकी शरण में जो भी आता है या आया है; उसका सर्वस्व हितरूप ही हो गया है; अत: आप सुहितकर हो।

जन्म-मरण आदि दु:खों और सभी प्रकार की आधियों-व्याधियों को हरनेवाले हो। मानसिक बीमारियों को आधि कहते हैं और शारीरिक बीमारियों को व्याधि कहते हैं।

सन्त कवि कहते हैं कि मैं तो आपकी भक्ति का अनुरागी हूँ; इसलिए निश्चितरूप से अजर-अमरपद का भागी हूँ।

तात्पर्य यह है कि मुझे आप जैसे आधि-व्याधि से रहित अजर-अमर पद की प्राप्ति अवश्य होगी; आपकी भक्ति का ऐसा ही प्रताप है।

इसके बाद एक घत्तानन्द छन्द दिया गया है; जो इसप्रकार है -

(घत्तानन्द)

जय जय सुखसागर, सुजस उजागर, गुणगण आगर, तारण हो।
जय संत उधारण, विपति विडारण, सुख विस्तारण, कारण हो ।।
तुम गुणगान परम फलदान, सो मंत्र प्रमान विधान करूँ।
जहरी कर्मनि वैरी की कहरी, असहैरी भव की व्याधि हरूँ ।।११।।

हे सुख के सागर सिद्ध भगवान ! आपकी जय हो, जय हो। आपका यश तो सम्पूर्ण जगत में उजागर हो रहा है। गुणों के समुदाय के तुम आगर हो, आगार हो एवं सम्पूर्ण जग के तारणहार हो।

हे सन्तों का उद्धार करनेवाले सिद्ध भगवान ! आप सभी प्रकार की विपत्तियों को विदारण करनेवाले हो और सुख का विस्तार करनेवाले हो तथा सुख के कारण हो।

हे सिद्ध भगवन ! आपके गुणों का गान करना उत्कृष्ट फल देनेवाला है। मैं आपके गुणगान का विस्तार मंत्र के अनुसार करता हूँ। उसके फल में कर्मशत्रुओं की जहरीली, बरदाश्त के बाहर की यह कष्ट देनेवाली संसार की जो व्याधि है, उसका हरण करता हूँ।

उक्त छन्द में सिद्ध भगवान को सुख का सागर, अनन्त गुणों का आगर या आगार, संतों के उद्धारक, विपत्तियों के नाशक और सुख का विस्तार करनेवाले कहा गया है।

पाँचवीं पूजन

सिद्ध भगवान को जो आनन्द निरन्तर प्रतिसमय प्राप्त है; उस आनन्द की महिमा की महिमा प्रदर्शित करते हुए कविवर संतलालजी इसी पाँचवीं पूजन के अन्तिम अर्घ्य संबंधी छन्द में जो कुछ कहते हैं; वह अपने आप में अद्भुत है।

प्रस्तुत कृति में प्रत्येक जयमाला के अर्थ एवं भाव पर हम विचार कर रहे हैं। उक्त छन्द भी पाँचवीं पूजन की जयमाला के एकदम ऊपर है। तात्पर्य यह है कि बस इस छन्द के बाद ही जयमाला आरंभ होती है।

उक्त छन्द मूलत: इसप्रकार है –

(सवैया इकतीसा)

जेते कछु पुद्गल परमाणु शब्दरूप,
भये हैं, अतीत काल आगे होनहार हैं।
तिनको अनंत गुण करत अनंतबार,
ऐसे महाराशि रूप धरैं विसतार हैं।।
सब ही एकत्र होय सिद्ध परमातम के,
मानो गुण गण उचरन अर्थधार हैं।
तौं भी इक समय के अनंत भाग अनंद को,
कहत न कहैं हम कौन परकार हैं।।१३०।।

इस जगत में जितने भी पुद्गल परमाणु शब्दरूप परिणमित हो रहे हैं, अतीतकाल में हो गये हैं और भविष्य में होनेवाले हैं; उन सभी को मिलाकर जो जोड़रूप राशि आवे; उस राशि का अनंत में अनंतबार गुणा करने पर जो महाविस्तारवाली महाराशि आवेगी; वह महाराशिरूप शब्दावली पूरी तरह एकत्रित होकर सिद्ध परमात्मा के गुणों का अर्थ सहित उच्चारण करें; तब भी सिद्ध भगवान के एक समय के आनन्द के अनंतवें भाग का भी कथन नहीं कर सकती।

अब आप ही बताइये कि हम उनके गुणों का वर्णन कैसे कर सकते हैं ? तात्पर्य यह है कि उनके **एक समय के आनन्द का वर्णन भी जब कोई नहीं कर सकता तो फिर हम उनके गुणों का वर्णन किसप्रकार कर सकते हैं ? उनके गुणों का वर्णन करना हमारे वश की बात नहीं है।**

सिद्ध भगवान के गुणों की महिमा बतानेवाले इस छन्द में जो बात कही गई है; वह अतिशयोक्ति नहीं है, अपितु एक वास्तविक सत्य है।

इस पंचम पूजन की जयमाला के आरंभ में भी एक दोहा दिया गया है; जो इसप्रकार है –

(दोहा)

शिवगुण सरधा धार उर, भक्ति भाव है सार।
केवल निज आनन्द करि, करूँ सुजस उच्चार।।१।।

मुक्ति को प्राप्त सिद्ध भगवान के गुणों की श्रद्धा हृदय में धारण करके, मैं उनकी भक्ति करता हूँ; क्योंकि भक्ति के भाव ही सारभूत हैं।

संत कवि कहते हैं कि मैं केवल अपने आनन्द के लिए ही सिद्ध भगवान के सुयश का उच्चारण कर रहा हूँ।

तात्पर्य यह है कि इसमें मेरी कोई लौकिक कामना नहीं है। दूसरी बात यह है कि मेरे इस प्रयास से सिद्ध भगवान की महिमा कुछ बढ़ जायेगी – ऐसा भी कुछ नहीं है। वे तो स्वयं इतने महान हैं कि उन्हें अपनी महिमा बढ़ाने के लिए किसी की कोई आवश्यकता नहीं है। उन्हें ऐसा कोई भाव भी नहीं है; क्योंकि वे तो पूर्ण वीतरागी हो गये हैं।

शेष पूरी जयमाला पद्धरि छन्द में है।

दूसरा छन्द इसप्रकार है –

(पद्धरि छन्द)

जय मदन कदन मन करण नाश, जय शांतिरूप निज सुख विलास।
जय कपट सुभट पट करन सूर, जय लोभ क्षोभ मद दम्भ चूर।।२।।

हे सिद्ध भगवान ! आपने कामदेव अर्थात् काम विकार का नाश कर दिया है तथा मन और करण माने इन्द्रियों का भी नाश कर दिया है। हे भगवान ! आप शान्तिस्वरूप निजसुख में विलास कर रहे हैं।

नाश कर दिया का अर्थ यह नहीं है कि इन्द्रियों में कुछ तोड़–फोड़ कर दी है। मात्र यह अर्थ है कि उन्हें जीत लिया है। अब उन्हें अपने ज्ञान और आनन्द में इन्द्रियों की आवश्यकता नहीं है। इन्द्रियाँ या इन्द्रियज्ञान या इन्द्रिय आनन्द की भी उन्हें आवश्यकता नहीं है। वे तो एकदम अतीन्द्रिय ज्ञान और अतीन्द्रिय आनन्द का निरन्तर उपयोग कर रहे हैं। **इन्द्रियों और मन को काम में नहीं लेना, उनका उपयोग नहीं करना ही उन्हें जीतना है। सिद्ध भगवान को जब अतीन्द्रिय ज्ञान और अतीन्द्रिय आनन्द प्राप्त है तो फिर उन्हें इन्द्रियों की क्या आवश्यकता है? यही इन्द्रियों को जीतना है।**

हे भगवन् ! आप कपटरूपी सुभट को पट माने चित्त करने में शूरवीर हैं और आप लोभ, क्षोभ (राग–द्वेष) और मद (मान) के दम्भ को चूर करनेवाले हो।

तात्पर्य यह है कि क्रोध, मान, माया और लोभ – ये कषायें आपके हैं ही नहीं। आप तो इन सबसे पार हो गये हो।

इस छन्द में अन्त्यानुप्रास की छटा देखने योग्य है। **कपट सुभट पट** और **मदन कदन मन करण** – इन पंक्तियों में अन्त्यानुप्रास के साथ–साथ सभी अक्षर ह्रस्व हैं, एक भी अक्षर दीर्घ नहीं है। **(क्रमश:)**

शोक समाचार

मोंधा–सेलू (महा.) निवासी श्रीमती कमलाबाई इंदरचंदजी बिनायके का दिनांक 2 दिसम्बर को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आपकी स्मृति में ट्रस्ट हेतु 5000/– रुपये प्राप्त हुये।

दिवंगत आत्मा चतुर्गति के दु:खों से छूटकर शीघ्र ही अनंत अतीन्द्रिय आनंद को प्राप्त हो – यही मंगल भावना है।

2 जनवरी 2014, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-32 / 2012-14

ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन में संचालित –

दैनिक कार्यक्रम

प्रात:काल –

5.15 से 6.15	आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी का प्रवचन
6.15 से 7.00	पाठ एवं जी-जागरण पर डॉ. भारिल्ल का प्रवचन
7.30 से 8.15	विभिन्न कक्षायें (1) क्रमबद्धपर्याय - डॉ.संजीवकुमारजी गोधा (शास्त्री प्रथम वर्ष)
8.15 से 9.00	प्रवचन : ब्र. यशपालजी जैन - योगसार
9.00 से 9.45	आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी का सी.डी. प्रवचन एवं विद्यार्थियों द्वारा प्रश्नमंच

सायंकाल –

6.00 से 6.45	गुणस्थान विवेचन - ब्र. यशपालजी जैन
7.00 से 7.30	जिनेन्द्र भक्ति
7.30 से 8.30	**डॉ. भारिल्ल का प्रवचन :** समयसार- सर्वविशुद्धज्ञान अधिकार पर
8.30 से 9.15	विभिन्न कक्षायें

(1) आप्तपरीक्षा - पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील (शास्त्री द्वितीय वर्ष)
(2) प्रमेयरत्नमाला - पण्डित पीयूषजी शास्त्री (शास्त्री प्रथम वर्ष)
(3) तत्त्वज्ञान पाठमाला-भाग 2 - पण्डित सोनूजी शास्त्री
(4) इष्टोपदेश - पण्डित अनेकान्तजी शास्त्री

नोट – जो भी साधर्मी यहाँ रहकर इन कार्यक्रमों का लाभ लेना चाहते हैं, वे कार्यालय में संपर्क कर सकते हैं। सभी साधर्मीजन प्रवचनहॉल में होने वाले कार्यक्रमों का सीधा प्रसारण इंटरनेट के माध्यम से **www.ustream.tv/channel/ptst** पर देख सकते हैं।

आध्यात्मिक शिविर एवं वार्षिकोत्सव संपन्न

भीलवाड़ा (राज.) : यहाँ कावाखेड़ा शास्त्री नगर स्थित सीमंधर जिनालय का प्रथम वार्षिक महोत्सव एवं आध्यात्मिक शिविर का आयोजन दिनांक 20 से 22 दिसम्बर 2013 तक किया गया।

इस अवसर पर ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना, पण्डित राजकुमारजी शास्त्री बांसवाड़ा, पण्डित संजयजी शास्त्री मंगलायतन के प्रवचनों का लाभ मिला।

शिविर के आमंत्रणकर्त्ता श्री महाचंदजी सेठी थे। कार्यक्रम में श्री आदिनाथ पंचकल्याणक विधान का आयोजन किया गया, जिसके आयोजनकर्त्ता श्री शांतिलालजी चौधरी परिवार भीलवाड़ा थे। ध्वजारोहण श्री नेमीचंदजी बघेरवाल ने किया।

विधि-विधान के संपूर्ण कार्य पण्डित संजयजी शास्त्री मंगलायतन द्वारा संपन्न कराये गये।

वेदी प्रतिष्ठा संपन्न

जबलपुर (म.प्र.) : यहाँ बड़ा फुहारा स्थित श्री महावीर स्वामी दिगम्बर जिनमंदिर में दिनांक 20 दिसम्बर को वेदी प्रतिष्ठा सानंद संपन्न हुई।

इस अवसर पर प्रात:काल शोभायात्रा निकाली गई, जिसमें जबलपुर के अतिरिक्त आसपास के नगरों के अनेक साधर्मीजन सम्मिलित हुये। इसके पश्चात् जिनमंदिर में शान्तिविधान का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम में श्री निर्मलकुमार जितेन्द्रकुमार जैन परिवार द्वारा 11 इंची भगवान आदिनाथ की धातु की प्रतिमा, श्री नेमीचंद सुनीलकुमारजी जैन पायलवाला परिवार द्वारा भगवान शान्तिनाथ की प्रतिमा एवं वीतराग विज्ञान मण्डल के सभी सदस्यों की ओर से श्री सीमंधर भगवान की प्रतिमा विराजमान की गई। सभी प्रतिमायें जबेरा पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव से प्रतिष्ठित होकर आई थीं।

इस अवसर पर पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली के विशेष उद्बोधन का लाभ मिला।

विधि-विधान के समस्त कार्य ब्र. मनोजजी जैन, ब्र. श्रेणिकजी जैन द्वारा संपन्न कराये गये। कार्यक्रम का संचालन पण्डित विरागजी शास्त्री ने किया। **– अशोक जैन**

धर्मपरीक्षा ग्रंथ उपलब्ध

आचार्य अमितगति द्वारा रचित ग्रंथ 'धर्मपरीक्षा' का प्रकाशन श्री कुन्दकुन्द कहान मुमुक्षु आश्रम ट्रस्ट, कोटा द्वारा किया गया है, जिसका मूल्य 50/- रुपये है। प्राप्ति हेतु संपर्क करें - **रतन चौधरी, 8104597337**

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो - वीडियो प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें–
वेबसाईट - www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र–श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com

प्रकाशन तिथि : 28 दिसम्बर 2013

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **डॉ.संजीवकुमार गोधा**, एम.ए.द्वय (जैनविद्या व तुलनात्मक धर्मदर्शन; इतिहास), नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी.
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें –
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com **फैक्स :** (0141) 2704127